International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-09-2020; Accepted: 11-10-2020; Published: 27-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 153-156

हिंदी मिश्र वाक्य में विशेषण उपवाक्य

धनजी प्रसाद

सहायक प्रोफेसर, भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, म. गां. अं. हिं.वि., वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

1. प्रस्तावना

मिश्र वाक्य वे वाक्य हैं, जिनकी रचना एक मुख्य उपवाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों के योग से होती है। जैसा कि हम जानते हैं, उपवाक्य के दो भेद किए जाते हैं- मुख्य उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य। 'मुख्य उपवाक्य' वह उपवाक्य है, जो अर्थ और व्याकरणिक रचना की दृष्टि से वाक्य के किसी अन्य उपवाक्य पर आश्रित नहीं होता है। 'आश्रित उपवाक्य' वह उपवाक्य है जो अर्थ या व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से मुख्य उपवाक्य पर आश्रित होता है। आश्रित उपवाक्य की प्रकार्यात्मक विशेषता को केंद्र में रखते हुए ध्यान देने वाली मूल बात यह है कि आश्रित उपवाक्य द्वारा मुख्य उपवाक्य के ही किसी घटक से जुड़ी सूचना का विस्तार किया जाता है। आश्रित उपवाक्य द्वारा मुख्य उपवाक्य के किस घटक से जुड़ी सूचना का विस्तार किया जाएगा, यह आश्रित उपवाक्य के स्वरूप, प्रकार एवं मुख्य उपवाक्य से संबंध पर निर्भर करता है।

आश्रित उपवाक्य के तीन प्रकार किए जाते हैं- संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य और क्रियाविशेषण उपवाक्य। 'संज्ञा उपवाक्य' वे आश्रित उपवाक्य हैं, जो मुख्य उपवाक्य में किसी संज्ञा पदबंध का प्रकार्य संपन्न करते हैं। 'विशेषण उपवाक्य' वे आश्रित उपवाक्य हैं, जो मुख्य उपवाक्य में किसी संज्ञा पद या पदबंध की विशेषता बताते हैं। क्रियाविशेषण उपवाक्य वे आश्रित उपवाक्य हैं, जो मुख्य उपवाक्य में क्रियाविशेषण का प्रकार्य संपन्न करते हैं।

यहाँ पर हम मिश्र वाक्यों में 'मुख्य उपवाक्य' और 'विशेषण उपवाक्य' के संबंधों, उनकी वाक्यात्मक स्थिति और आर्थी प्रकार्य आदि का विश्लेषण करेंगे, जिसमें यह देखा जाएगा कि विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के किन-किन घटकों की विशेषता बताता है? वह विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के किसी घटक पदबंध की विशेषता किस प्रकार से बताता है? संरचना की दृष्टि से किसी घटक विशेष की विशेषता बताने के लिए मिश्र वाक्य में किस प्रकार की वाक्य रचना का प्रयोग होता है? और विशेषण उपवाक्य द्वारा मुख्य उपवाक्य में जिस संज्ञा पद या पदबंध की विशेषता बताई जाती है, वह मुख्य उपवाक्य में कौन-कौन सा प्रकार्य करता है?

2. मुख्य उपवाक्य में कारक संबंध और विशेषण उपवाक्य

विशेषण उपवाक्य की परिभाषा इस प्रकार से दी जाती है कि 'वह आश्रित उपवाक्य जो मुख्य उपवाक्य में आए किसी संज्ञा पद या पदबंध की विशेषता बताने का कार्य करता है, विशेषण उपवाक्य कहलाता है। जैसा कि हम जानते हैं कि 'सरल वाक्य' ही मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य में जब प्रयुक्त होते हैं, तो उपवाक्य बन जाते हैं,क्योंकि वे अपने से बड़ी संरचना का अंग बन जाते हैं। अतः उपवाक्यों में भी वाक्य रचना के नियम वैसे ही रहते हैं जैसे सरल वाक्यों में रहते हैं। किसी भी उपवाक्य में कर्ता, कर्म, कर्म, संप्रदान आदि कारक संबंध और अन्य प्रकार्यात्मक संबंध सरल वाक्य की तरह ही निर्मित होते हैं। किसी मिश्र वाक्य में मुख्य उपवाक्य के साथ आए आश्रित उपवाक्य द्वारा मुख्य उपवाक्य के घटक का विस्तार किया जाता है। वह घटक मुख्य उपवाक्य में कर्ता, कर्म, कर्म, संप्रदान आदि कारक संबंध अथवा अन्य किसी भी प्रकार्यात्मक संबंध में प्रयुक्त पदबंध के रूप में आ सकता है।

अतः यहाँ हम मुख्य उपवाक्य में विभिन्न कारकों और अन्य भूमिकाओं में आए संज्ञा पदों और पदबंधों तथा उनकी विशेषता बताने के लिए आए हुए विशेषण पदबंधों का विश्लेषण करेंगे। विशेषण उपवाक्य वाले मिश्र वाक्यों के गहन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मुख्य उपवाक्य में 'कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण तथा अन्य प्रकार्यात्मक संबंधों, जैसे- संबंधवाची, मुख्य पद और पूरक' इन सभी प्रकार्य स्थानों पर संज्ञा पदबंध आते हैं और इनमें से किसी भी प्रकार्य स्थान पर आए हुए संज्ञा पदबंध की विशेषता 'विशेषण उपवाक्य' बताता है। इसे समझने के लिए आगे अब हम विभिन्न प्रकार्य स्थानों पर मुख्य उपवाक्य में आए हुए संज्ञा पदबंधों को देखेंगे और यह देखेंगे कि उनकी विशेषता बताने के लिए किस प्रकार से विशेषण उपवाक्य आ रहे हैं और मिश्र वाक्यों की रचना किस-किस प्रकार से हो रही है।

2.1 मुख्य उपवाक्य में कर्ता और विशेषण उपवाक्य

किसी वाक्य में वह संज्ञा पदबंध 'कर्ता' होता है, मुख्य क्रिया द्वारा अभिप्रेत कार्य को संपादित करता है। हिंदी मिश्र वाक्यों में विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य में आए हुए कर्ता पद की भी विशेषता बताते हैं, जैसे-

• वह लड़का बाहर बैठा है जो कल आया था।

इस वाक्य में 'जो कल आया था' विशेषण उपवाक्य है, जो मुख्य उपवाक्य के कर्ता 'वह लड़का' की विशेषता बता रहा है। इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण देख सकते हैं -

- यहाँ वह आदमी दौड़ रहा है जिसका पैर टूटा हुआ है।
- उस खिलाड़ी ने छक्के मारे जिससे कोई उम्मीद नहीं थी।
- वह कार खड़ी है जो पंचर हो गई थी।
- इस परीक्षा में वही बैठेगा जिसके नंबर सबसे अधिक होंगे।
- इस कार्यक्रम में ऐसे लोग आएँगे जिन पर नजर रखना जरूरी होगा।
- वे सारे लोग चले गए जिनका कोई काम नहीं था।

इन उदाहरणों से हम देख सकते हैं कि भिन्न-भिन्न प्रकार के विशेषण उपवाक्यों द्वारा मुख्य उपवाक्य के कर्ता पद की विशेषता बताई जाती है। इसके लिए मिश्र वाक्य में संरचना की दृष्टि से 'वह ... जो' संयोजक युग्म (conjunction pair) का प्रयोग हो रहा है। मुख्य उपवाक्य में 'वह' संयोजक(conjunction) आ रहा है तथा आश्रित उपवाक्य में 'जो' (conjunction)। रूपरचना की दृष्टि से देखा जाए तो 'वह' के कुछ दूसरे रूपिमीक रूप (morphological forms) और संरूप, जैसे- 'वही, वह भी, ऐसा, वैसा, ऐसे, वैसे' आदि भी आते हैं। दूसरी ओर आश्रित उपवाक्य में 'जो' के अलावा 'जो के सभी परसर्गीय रूप (postpositional forms), जैसे- 'जिसको, जिसे, जिससे, जिसमें, जिसपर, जिसका, जिसकी, जिसके' आदि आते हैं।

विशेषण उपवाक्य द्वारा मुख्य उपवाक्य में 'कर्ता' की विशेषता बताए जाने की स्थिति में 'वह' और 'जो' के निम्नलिखित युग्म में देखने को मिलते हैं- 'वह ... जो', 'ऐसे ... जैसे', 'वह ... जिसका/जिसकी/जिसके', 'वह ...जिस', 'वे ... जो', 'वे ... जिन'।

इस संदर्भ में एक और उल्लेखनीय बात यह है कि मुख्य उपवाक्य में कर्ता अनुक्त भी हो सकता है, जैसा कि उदाहरण वाक्य- 'इस परीक्षा में वही बैठेगा, जिसके नंबर सबसे अधिक होंगे' में 'वही' के बाद आने वाला संज्ञा पद 'व्यक्ति/अभ्यर्थी' अनुक्त या लुप्त है। इसके बावजूद विशेषण उपवाक्य द्वारा उसकी विशेषता बताई जा रही है।

मुख्य उपवाक्य में कर्ता के विविध रूप और विशेषण उपवाक्य

किसी भी वाक्य में कर्ता केवल अपने प्रत्यक्ष रूप में ही नहीं आता, बल्कि कुछ अन्य रूपों में भी आता है। कुछ क्रियाएँ ऐसी होती हैं, जिन्हें दो कर्ता पदों की आवश्यकता होती है जिनमें से एक प्रत्यक्ष/मुख्य कर्ता और दूसरा सहकर्ता होता है। इसके अलावा जैसा कि हम जानते हैं, हिंदी में क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप भी बनते हैं जिनके दो प्रकार हैं- प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक। इन रूपों के आने पर वाक्य कर्ता पदबंध तीन प्रकार से आते हैं- प्रत्यक्ष कर्ता, प्रेरक करता और मध्यस्थ कर्ता। मुख्य उपवाक्य में इनमें से किसी भी प्रकार का कर्ता आने पर उसकी विशेषता विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जा सकती है। इसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं-

(क) मुख्य उपवाक्य में सहकर्ता और विशेषण उपवाक्य

सहकर्ता वाली क्रियाओं में यदि प्रत्यक्ष/मुख्य कर्ता के अलावा दूसरा कर्ता (सहकर्ता) भी आया है तो उसकी विशेषता भी विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जा सकती है, जैसे-

- रमेश ने ऐसी लड़की से शादी की जो गूंगी थी।
- तुमने ऐसे लोगों से मारपीट की जो बड़े झगड़ालू हैं।
- मैंने उन लोगों से बातचीत की जिनकी कोई नहीं सुनता।
- आप उस व्यक्ति से मिलिए जो आपका काम कर दे।

(ख) मुख्य उपवाक्य में प्रेरक करता और विशेषण उपवाक्य

प्रेरणार्थक क्रियाओं का प्रयोग होने पर यदि प्रेरक कर्ता वाक्य में आया है, तो उसकी विशेषता भी विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जाती है, जैसे-

- ऐसे व्यक्ति ने मुझसे खाना खिलवाया जिसे कोई नहीं जानता।
- ऐसे व्यक्ति ने आपसे खेती करवाई जिसके पास खुद खेत नहीं है।
- मैंने ऐसे व्यक्ति से काम करवाया जो नहीं करना चाह रहा था।
- मैंने ऐसी नर्स से दवा पिलवाई जो बहुत बड़ी थी।

इन वाक्यों में हम देख सकते हैं कि मुख्य उपवाक्य में आए हुए प्रेरक कर्ता और मध्यस्थ कर्ता दोनों की विशेषता विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जा रही है।

अतः स्पष्ट है कि मुख्य उपवाक्य में कर्ता पदबंध के किसी रूप में प्रयोग होने पर विशेषण उपवाक्य द्वारा उसकी विशेषता बताई जा सकती है।

2.2 मुख्य उपवाक्य में कर्म और विशेषण उपवाक्य

जिस संज्ञा पदबंध पर वाक्य की मुख्य क्रिया द्वारा अभिव्यक्त कार्य का प्रभाव पड़ता है, वह 'कर्म' कहलाता है। मिश्र वाक्य में विशेषण उपवाक्य द्वारा मुख्य उपवाक्य में 'कर्म कारक' के रूप में आने वाले संज्ञा पदों या पदबंधों की भी विशेषता बताई जाती है, जैसे-

- ऐसा फल मत खाओ जो बीमार कर दे।
- मोहन ने ऐसा काम कर दिया कि सब का नाम खराब हो गया।
- आप ऐसे रिश्ते क्यों लाते हैं जिनसे कोई उम्मीद नहीं होती।
- आप ऐसे रिश्ते क्यों लाते हैं जो जुड़ नहीं सकते।
- तुम वही काम क्यों करते हो जो खराब हो जाता है।
- तुम वही बात क्यों कहते हो जिससे सब को परेशानी होती है।
- तुम वह भी बात कहा करो जो सबको अच्छी लगती हो।
- कभी-कभी ऐसा भी होता है जो हम सोचे नहीं होते।
- मैं ऐसा क्या कह रहा हूँ कि तुम नहीं समझ पा रहे हो।

इन उदाहरणों के माध्यम से हम देख सकते हैं कि मुख्य उपवाक्य के 'कर्ता पदबंध' और 'विशेषण उपवाक्य' में जिस प्रकार के प्रयोग हुए हैं, लगभग वही प्रयोग और संबंध मुख्य उपवाक्य के 'कर्म पदबंध' और 'विशेषण उपवाक्य' में देखने को मिलता है। इसमें भी मुख्य उपवाक्य में 'वह तथा इसके विभिन्न रूप' और आश्रित उपवाक्य के आरंभ में 'जो तथा इसके विभिन्न परसर्गीय रूप' आते हैं। 'कर्म' अनुक्त या लुप्त होने पर भी विशेषण उपवाक्य द्वारा उसकी विशेषता बताई जा सकती है। कभी-कभी 'कि उपवाक्य' भी कर्म की विशेषता बताने की क्षमता रखते हैं जैसा कि अंतिम वाक्य 'मैं ऐसा क्या कह रहा हूँ कि तुम नहीं समझ पा रहे हो' में देखा जा सकता है। 'कि तुम नहीं समझ पा रहे हो' विशेषण उपवाक्य है, जो 'मैं ऐसा क्या कह रहा हूँ' मुख्य उपवाक्य में 'क्या' के बाद अनुक्त/लुप्त कर्म पदबंध की विशेषता बता रहा है।

2.3 मुख्य उपवाक्य में करण पदबंध और विशेषण उपवाक्य

जिन संज्ञा पदबंधों द्वारा वाक्य की मुख्य क्रिया द्वारा अभिव्यक्त अर्थ के संपादन में कर्ता के साथ सहायक उपकरण का कार्य किया जाता है, वे वाक्य में करण कारक में होते हैं। अर्थात करण कारक वह कारक है, जिसमें संज्ञा पद या पदबंध द्वारा क्रिया के संपादन में सहायक का काम किया जाता है। विशेषण उपवाक्य द्वारा अपने मुख्य उपवाक्य में 'करण कारक' के रूप में आने वाले संज्ञा पद या पदबंध की भी विशेषता बताई जाती है। इसे कुछ उदाहरणों से समझ सकते हैं-

- ऐसे चाकू से फल न काटो, जो तेज न हो।
- ऐसी खिड़की से मत देखो जिसमें ग्रिल ना हो।
- ऐसे डंडे से मारो जिससे ज्यादा चोट लगे।

- कुछ लकड़ी से हटाओ जो लंबा है।
- उन पत्थरों से मारो जो बड़े-बड़े हैं।
- उन पत्थरों से मारो जिनका आकार गोल है।

इन उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि मुख्य उपवाक्य में वह तथा वे के तिर्यक रूप- उस, उन, ऐसे, ऐसी, वैसे, वैसी आदि संयोजक (conjunction) मुख्य उपवाक्य में आ रहे हैं, तथा जो और इसके अन्य परसर्गीय रूप आश्रित उपवाक्य में आ रहे हैं। यहाँ ध्यान रखने वाली बात है कि अपने मूल रूप में 'वह' तथा 'ऐसा' संयोजक मुख्य उपवाक्य में नहीं आ सकते, क्योंकि 'करण कारक' को अभिव्यक्त करने के लिए 'से' परसर्ग का पदबंध के बाद आना जरूरी है, इसलिए संयोजक का तिर्यक रूप ही आता है। वह पुलिंग और स्त्रीलिंग दोनों रूपों में हो सकता है तथा एकवचन और बहुवचन दोनों रूपों के लिए भी आता है।

2.4 मुख्य उपवाक्य में संप्रदान कारक और विशेषण उपवाक्य

संप्रदान कारक वह कारक है, जिसमें क्रिया के संपादित होने से संबंधित संज्ञा पद को लाभ होता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि संप्रदान के रूप में आए हुए संज्ञा पदबंध के लिए क्रिया संपादित होती है। हिंदी में विशेषण उपवाक्य संप्रदान कारक के लिए आए हुए संज्ञा पदबंध की भी विशेषता बताते हैं। इन्हें कुछ उदाहरणों से इस प्रकार से समझ सकते हैं-

- मैंने उस लड़के के लिए किताब खरीदी, जो बहुत कमजोर है।
- तुमने ऐसे कुत्ते के लिए रोटी लाई, जो भाग गया।
- मोहन ऐसी गाय के लिए घास काटता है, जिसके पैर ठीक नहीं है।
- तुम उन बिल्लियों के लिए दूध लाओ, जो घर में धमाल मचाए हैं।
- वह ऐसे बच्चों के लिए काम करता है, जिनका कोई नहीं होता।
- रमेश वैसे लोगों को खाना खिलाता है, जिन्हें कोई नहीं पूछता।

इन उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि करण कारक की तरह संप्रदान कारक में भी वह तथा वे के तिर्यक रूप- उस, उन, ऐसे, ऐसी, वैसे, वैसी आदि मुख्य उपवाक्य में संप्रदान कारक के रूप में आए हुए संज्ञा पद या पदबंध से पहले लगते हैं तथा जो और इसके अन्य परसर्गीय रूप विशेषण उपवाक्य के आरंभ में लगते हैं।

2.5 मुख्य उपवाक्य में अपादान प्रबंध और विशेषण उपवाक्य

अपादान कारक वह कारक है जिसमें वाक्य में आए हुए संज्ञा पदबंध से क्रिया के संपादित होने पर अलग होने का बोध होता है। हिंदी मिश्र वाक्य में अपादान कारक के रूप में मुख्य उपवाक्य में आए हुए पदबंध की विशेषता भी विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जाती है। इसे निम्नलिखित उदाहरणों में देख सकते हैं-

- ऐसे पेड़ से पत्ते गिरते हैं जिसे पानी कम मिलता है।
- ऐसे स्टेशन से ट्रेन चली जहाँ खाने-पीने की भी व्यवस्था नहीं थी।
- मोहन ऐसी गाड़ी से गिरा जिसकी सीट टूटी हुई थी।
- रमेश उस पहाड़ से गिरा जो बहुत ढलान वाला था।
- बंदर उन डालियों से कूदे जो बहुत ऊँची थी।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि अपादान कारक में भी मुख्य उपवाक्य में वह तथा वे के तिर्यक रूप- उस, उन, ऐसे, ऐसी, वैसे, वैसी आदि आते हैं और विशेषण उपवाक्य में जो तथा इसके विभिन्न परसर्गीय रूप आते हैं। शेष बातें वही हैं, जिनकी करण कारक और संप्रदान में चर्चा की जा चुकी है।

2.6 मुख्य उपवाक्य में अधिकरण पदबंध और विशेषण उपवाक्य

किसी वाक्य में वह संज्ञा पदबंध अधिकरण कारक के रूप में होता है, जो क्रिया के संपादित होने के आधार का काम करता है। मुख्य उपवाक्य में अधिकरण कारक के रूप में आने वाले संज्ञा पदों और पदबंधों की विशेषता भी विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जाती है, जैसे-

- ऐसे मैदान में मैच चल रहा है जहाँ बैठने की जगह भी नहीं है।
- उसकी गाड़ी ऐसी गली में गिरी है जिसमें घुसने लायक नहीं है।
- तुम उस जगह पर जाते हो जो बहुत दूर है।
- मैं उन घरों में घूमता हूँ जो बहुत गरीब होते हैं।
- मेरा शोध ऐसे लोगों पर है जिनका कोई ठिकाना नहीं होता।

इसमें भी मुख्य उपवाक्य में वह तथा वे के तिर्यक रूप- उस, उन, ऐसे, ऐसी, वैसे, वैसी आदि आते हैं और विशेषण उपवाक्य में जो तथा इसके विभिन्न परसर्गीय रूप आते हैं। अन्य बातें करण कारक और अन्य कारकों में वर्णित नियमों जैसी ही हैं।

3. मुख्य उपवाक्य में अन्य प्रकार्य-स्थान और विशेषण उपवाक्य

कारक संबंधों के प्रकार्य स्थानों पर आने वाले संज्ञा पद या पदबंधों की विशेषता बताने के अलावा मुख्य उपवाक्य में अन्य प्रकार्य स्थानों पर आने वाले संज्ञा पदों या पदबंधों की भी विशेषता आश्रित विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जाती है। इनमें से मुख्यतः तीन प्रकार के पदबंधों संबंधी चर्चा आगे की जा रही है-

3.1 मुख्य उपवाक्य में संबंधवाची और विशेषण उपवाक्य

वे संज्ञा पद या पदबंध जो किसी संज्ञा पद या पदबंध से पूर्व 'का/की/के' परसर्गों के माध्यम से जुड़ते हैं, और उनसे अपना संबंध अभिव्यक्त करते हैं, संबंधवाची (genitive) कहलाते हैं। मुख्य उपवाक्य में किसी भी कारक संबंध में आए संज्ञा पदबंध के संबंधवाची संज्ञा पद या पदबंध की विशेषता भी विशेषण उपवाक्य बताते हैं, जिसे कुछ उदाहरणों द्वारा इस प्रकार से देखा जा सकता है-

- वह ऐसे पिता का लड़का है जिसका कोई ठिकाना नहीं होता।
- तुमने ऐसे काम की बात की है जिसको सुनकर कोई भी चौंक जाएगा।
- यह संस्था ऐसे लोगों की माताओं के लिए है जो बहुत गरीब हैं।
- ये पत्ते ऐसे पेड़ों की डालियों से गिर रहे हैं जो सूख चुके हैं।
- वह ऐसे मकान की छत पर बैठा है जो बहुत ऊँचा है।

इन उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि विभिन्न कारक संबंधों में आए हुए संज्ञा पदों या पदबंधों के साथ आए हुए संबंधवाची संबंध में आए हुए अन्य संज्ञा पदबंधों की विशेषता भी विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जा रही है, जैसे- पहले वाक्य में 'लड़का' शब्द कर्ता रूप में है और उसका संबंधवाची 'पिता' है और उस 'पिता' शब्द की विशेषता 'जिसका कोई ठिकाना नहीं होता' विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जा रही है। यही स्थिति अन्य वाक्यों में अन्य कारक संबंधों में आए हुए संज्ञा पदबंधों के संबंधवाची पदबंधों के साथ देखी जा सकती है।

3.2 मुख्य उपवाक्य में मुख्य पदबंध और विशेषण उपवाक्य

वाक्य का एक प्रकार 'कोप्यूला वाक्य' (Copula Sentence) है। ऐसे वाक्यों में एक 'मुख्य पदबंध' होता है और दूसरा उसका 'पूरक पदबंध' होता है। मुख्य पदबंध कर्ता की तरह ही होता है, लेकिन चूँकि कोप्यूला वाक्यों में कोई कार्य संपादित नहीं होता, इसलिए उसे मुख्य पदबंध कहना अधिक उपयुक्त होगा। उनकी विशेषता विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जाती है, जैसे-

- वह लड़का डॉक्टर है जो सामने से आ रहा है।
- वैसे लोग चोर होते हैं जिनका मुँह नहीं खुलता।
- वह आदमी बहुत अच्छा है जो कुछ ना बोले।

3.3 मुख्य उपवाक्य में पूरक पदबंध और विशेषण उपवाक्य

कोप्यूला वाक्यों में मुख्य पदबंध के अलावा 'पूरक पदबंध' होता है और कोप्यूला क्रिया होती है। उस पूरक पदबंध की विशेषता भी विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जाती है, जिसे इन उदाहरणों में देखा जा सकता है-

- मोहन ऐसा डॉक्टर है जो किसी का भी इलाज कर देता है।
- मलेरिया व रोग है जो अच्छे-अच्छों को तोड़ देता है।
- रमेश इतना सुंदर है कि कोई भी मोहित हो जाता है।

इन वाक्यों में विशेषण उपवाक्य द्वारा मुख्य उपवाक्य के पूरक पदबंधों की विशेषता बताई जा रही है। अंतिम वाक्य में विशेषण उपवाक्य 'सुंद'र विशेषण के प्रविशेषण का काम कर रहा है। यहाँ 'कि' उपवाक्य ही विशेषण उपवाक्य का कार्य कर रहा है।

4. उपसंहार

संरचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार किए जाते हैं- सरल, मिश्र और संयुक्त वाक्य। इनमें से मिश्र वाक्यों की रचना 'मुख्य उपवाक्य' और 'एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों' द्वारा होती है। 'विशेषण उपवाक्य' आश्रित उपवाक्य का एक प्रकार है। यह मुख्य उपवाक्य में किसी भी प्रकार्य-स्थान पर आए हुए संज्ञा पद या पदबंध की विशेषता बताता है, चाहे वह कारक (case) संबंध में किसी प्रकार्य-स्थान पर आया हो या किसी अन्य प्रकार्य-स्थान पर आया हो। कारकों में 'कर्ता' सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके विविध रूप भी देखे जा सकते हैं। उन सभी रूपों की विशेषता विशेषण उपवाक्य द्वारा बताई जा सकती है। इन सभी की सोदाहरण विस्तृत चर्चा ऊपर की गई।

भाषा में हम जितने गहन स्तर पर जाते हैं, हमें किसी भाषिक इकाई की रचना संबंधी उतने ही अधिक नियम प्राप्त होते हैं। हिंदी के मिश्र वाक्यों के संबंध में अभी तक हमें परिचयात्मक सामग्री ही प्राप्त हो पाती थी। इससे पूर्व मैंने 'हिंदी मिश्र वाक्यों में 'कि' उपवाक्य' (2019) शोधपत्र लिखा था और 'मुख्य उपवाक्य' तथा 'कि उपवाक्य' के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला था। यह शोधपत्र 'मुख्य उपवाक्य' तथा 'विशेषण उपवाक्य' के विविध पक्षों पर प्रकाश डालता है। इसी प्रकार से 'मुख्य उपवाक्य' तथा 'क्रियाविशेषण उपवाक्य' के विविध पक्षों का भी विश्लेषण किया जा सकता है। मिश्र वाक्य के गहन विश्लेषण के संबंध में एक और पक्ष यह है कि किसी मिश्र वाक्य में एक से अधिक आश्रित उपवाक्य किस प्रकार से आते हैं और कौन-कौन से प्रकार्य संपन्न करते हैं।

5. संदर्भ सूची

1. गुरु, कामता प्रसाद. (2010). हिंदी व्याकरण. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
2. चौधरी, तेजपाल. (2003). हिंदी व्याकरण विमर्श. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
3. तरूण, हरिवंश. (2010). मानक हिंदी व्याकरण और रचना. प्रकाशन संस्थान : नई दिल्ली।
4. तिवारी, भोलानाथ. (2004). हिंदी भाषा की संरचना. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
5. पाण्डेय, अनिल कुमार. (2010). हिंदी संरचना के विविध पक्ष. नई दिल्ली : प्रकाशन संस्थान।
6. प्रसाद, धनजी. (2019). हिंदी का संगणकीय व्याकरण. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
7. ... ... (2019). हिंदी मिश्र वाक्यों में 'कि' उपवाक्य. (पृ.243-249). Research Chronicler.
8. सिंह, पर्णदत्त. (1999). व्याकरणशास्त्रीय परिभाषाएँ एवं अनुशीलन. वाराणसी : कलाभवन।
9. सिंह, सूरजभान (2000). हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण. नई दिल्ली : साहित्य सहकार।